अल्लाह तआला

अर्श पर या हर जगह

44

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।

सब तारीफ़े अल्लाह तआला के लिये हैं जो सारे जहानों का पालनहार है। हम उसी की तारीफ करते हैं और उसी से मदद और माफी चाहते हैं। अल्लाह की लातादाद सलामती, रहमतें और बरकतें नाज़िल हों मुहम्मद सल्ल. पर, आप की आल व औलाद और असहाब रज़ि. पर। व बअद!

अल्लाह तआला कहां है? इस सवाल का सही जवाब तो यह है कि अल्लाह अर्श पर है। लेकिन अक्सर लोग यह समझते और मानते हैं कि अल्लाह तआला हर जगह है। हालांकि उनकी यह समझ और अक़ीदा कुरआन व सही अहादीस के ख़िलाफ़ है। यह पर्चा इसी बात को बताने–समझाने की एक कोशिश है ताकि आम मुसलमानों का अक़ीदा सही हो जाए। अल्लाह से दुआ है कि इस काम में वह हमारी मदद फ़रमाए। (आमीन)

कुरआन में अल्लाह के अर्श पर होने का सुबूत

''बेशक! तुम्हारा रब अल्लाह है। जिसने आसमान व ज़मीन को 6 दिनों में पैदा किया। फिर अर्श पर क़ायम हुआ।''(आराफ़–आयत–54) ज़मीन व आसमानों को पैदा करने के बाद ''अल्लाह अर्श पर क़ायम हुआ।'' यही बात अल्लाह ने सूरह युनुस आयत–3, सूरह राअद आयत–2, सूरह ताहा आयत–5, सूरह फुर्कान आयत–59, सूरह सज्दा–आयत–4 और सूरह हदीद आयत–4 में भी बयान फ़रमाई।

अहादीसे रसूल सल्ल.से अल्लाह के अर्श पर होने का सुबुत

1. ''वह तख़्ती जिसमें लिखा हुआ है कि मेरी रहमत मेरे गुस्से पर ग़ालिब है। वह अर्श पर अल्लाह के पास रखी हुई है।'' (बुखारी–मुस्लिम)

2. उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब रज़ि. फ़रमाती हैं। ''मेरी शादी (अल्लाह के रसूल सल्ल. से) अल्लाह ने सातों आसमानों के ऊपर से की है।'' (बुख़ारी–7420)

3. आप सल्ल. ने फ़रमाया (क़यामत के दिन) ''मैं अपने रब के पास जाऊंगा और वह अपने अर्श पर होगा। (बुख़ारी–7440)

4. ''जुमे का दिन वह बा बरक़त दिन है जिसमें तेरा रब जो बुलन्दियों और बरकतों वाला है, अपने अर्श पर बैठा।'' (मुसनद शाफ़ई)

5. ''तुम जानते हो कि अल्लाह कौ़न है? अल्लाह का अर्श आसमानों के ऊपर है और अर्श अल्लाह की वजह से ऐसे चरचराता है जैसे पालान सवार की वजह से चरचराता है।(अबुदाऊद– 4726–ज़ईफ़)

6. ''अल्लाह अर्श पर है जो कि सातों आसमानों के ऊपर है।'' (अबुदाऊद–4723–ज़ईफ़)

इन अहादीसे रसूल सल्ल. से जहां यह मालूम हुआ कि अल्लाह अर्श पर है जो सातों आसमानों के ऊपर है। वहीं यह भी पता चला कि अर्श तमाम आसमानों को

घेरे हुए है। हालांकि कि कुरआन व अहादीस के इन साफ़ दलाइल के बाद उलेमा किराम के अक़वाल से इस मसले को साबित करने की ज़रूरत नही है। फिर भी मुक़ल्लिदीन की तसल्ली के लिए इमामाने दीन के अक़वाल पेश है।–
(1) इमाम अबु हनीफ़ा रह. ने 'वसीयत' में फ़रमाया कि''हम इस बात का इकरार करते हैं कि अल्लाह अर्श पर मुस्तवी है। जबकि वह क़रार व ठहराव का मोहताज नही।''
(2) इमाम मालिक रह. ने कहा ''अल्लाह का अर्श पर होना मालूम है लेकिन वह किस हालत में है ? मालूम नहीं। ईमान इस पर वाजिब है और वह अर्श पर किस तरह बैठा या क़रार पकड़े है का सवाल करना बिदअत है।''
(इज्तेमाअ जयुश अल इस्लामिया–सफ़ा–132)
(3) इमाम तबरानी रह. ने कहा कि ''इमाम शाफ़ई रह. अल्लाह के अर्श पर होने के कायल है।''(''–सफ़ा–59)
(4) इमाम अहमद बिन हम्बल रह. ने फरमाया ''अल्लाह तआला ने जिस तरह अर्श पर होने का ज़िक्र किया है। हम उसी तरह इसका इक़रार करते हैं। ''–सफा–197198)
(5)इमाम अबुल हसन अशअरी रह.ने कहा कि;अगरकोई इस्तवा के बारे में पूछेगा तो हम यही कहेंगे कि बेशक अल्लाह अर्श पर मुस्तवी है। इसलिए कि ऐसा ही कुरआन में बयान हुआ है।''(इख़्तिलाफ़ अल मुदल्लीन)
(6) इमाम अली अल तबरी रह.ने कहा'' जान लो ! बेशक! अल्लाह आसमानों के ऊपर बल्कि हर चीज़ से ऊपर अपने तख़्त (अर्श) पर क़ायम है और अपनी मख़लूक़ से अलग है।'' (मुश्किल अल आसार)
(7) हाफ़िज़ अबु बकर अजरी रह.ने कहा'' अहले इल्म का यही कहना है कि अल्लाह आसमानों के ऊपर अर्श पर कायम है। उसका इल्म हर जगह है और हर अमल उसी की तरफ चढ़कर जाता है।''(अल सर फी अल सुन्न:)
(8) हाफ़िज़ ज़हबी रह. फ़रमाते है'' हिजाज़, ईराक़, शाम और यमन ग़रज हर मुल्क के उलेमा का हमने यही मसलक पाया कि अल्लाह अर्श पर है। अपनी मख़लूक से अलग है उसकी हालत मालूम नही। वह ऐसा ही है जैसे खुद उसने कहा यानि घेरा अल्लाह ने हर चीज़ को अपने इल्म से।''
(9) इमाम तबरानी रह. फ़रमाते हैं'' हम यह अक़ीदा रखते है कि अल्लाह अर्श पर हैं। वह सुनता और देखता है।''
(10) इमाम इब्ने ख़ुजैमा रह. ने कहां'' जो शख़्स इस बात का इकरार न करें कि अल्लाह सातों आसमानों के ऊपर अर्श पर है. और अपनी मख़लूक से जुदा है तो वह काफ़िर है। उससे तौबा कराई जायेगी। अगर वह तौबा कर ले तो ठीक वरना उसकी गर्दन मार दी जायेगी।''
(11) इमाम मूसली रह. कहते हैं कि '' कुरआन में साफ बयान हुआ है कि अल्लाह सातों आसमानों के ऊपर अर्श पर है।''
(12) इमाम बग़वी रह. ने कहां'' अहले सुन्नत का यह अक़ीदा है कि अल्लाह अर्श पर क़ायम है। किस तरह ? यह मालूम नहीं।

इस्तवा अल्लाह की एक सिफ़त है जिस पर हर एक को इमान लाना वाजिब है और कैफ़ियत का इल्म अल्लाह ही को है। '' (दारूल किताब अल

अरबी–सफ़ा–184)

(13) शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी रह. ने कहा '' हमारा रब अर्श पर मुस्तवी है और सारी बादशाही को मुहीत है। इसकी दलील कुरआन की सात आयतें है।''

(14) इमाम ग़ज़ाली कहते हैं '' अल्लाह अर्श पर मुस्तवी है। अर्श के ऊपर है बल्कि हर चीज़ के ऊपर है।'' (अहया अल–उलूम)

(15) इमाम मुहम्मद बिन अतास रह. ने कहा '' अल्लाह अर्श पर मुस्तवी है। इस बात पर इमान लाना हर मुसलमान के लिए वाजिब है।'' (तन्ज़ीहा अल ज़ात वल सिफ़ात)

(16) इमाम शौकानी कहते हैं '' कुरआने करीम की बहुत सी आयात से साबित है कि अल्लाह अर्श पर मुस्तवी है।'' (रिसाला अल सिफ़ात)

(17) शाह वली उल्लाह रह. ने कहा '' अल्लाह की ज़ात अर्श के ऊपर है।'' (हुस्न अल अक़ीदा)

(18) मुहम्मद युसुफ़ बिलगिरामी रह. ने कहा '' अल्लाह बज़ाता (खुद) अर्श पर है और जम्हूर मुहद्दिसीन का यही मज़हब है।'' (फ़रअ नाबित मिन अल असल अल साबित)

इस मसअले में तमाम सहाबा रजि., ताबईन व तबह ताबईन रह. और अइम्मा मुज्तहिदीन का यही अक़ीदा है। अगर कोई एक हर्फ़ भी इसके खिलाफ़ उन लोगों से साबित करना चाहे तो नही कर सकता / अलबत्ता जहमिया व मुअतज़ेला जैसे कुछ गुमराह फिर्क़े ज़रूर सिफ़ते इस्तवा का इन्कार करते है। लेकिन यह फ़िर्क़े अहले सुन्नत वल जमाअत में दाखिल ही नही है।

वह आयतें जिनसे अल्लाह का मख़्लूक़ से ऊपर होना साबित होता है

(1) हम देखते हैं तेरे मुहं को बार–बार आसमान की तरफ़ उठाना। (बकरा –आयत–144)

(2) ऐ ईसा (अलैहि.)। में तुम्हे फेंरूगा और उठाऊंगाा अपनी तरफ। (आले इमरान–55)

(3) वो अपने रब से डरते है जो उनके ऊपर है। (नहल–50)

(4) हमने उठा लिया उसको ऊंची जगह पर। (मरयम–57)

(5) अल्लाह अपनी तदबीर से अहकाम आसमान से ज़मीन पर उतारता है। (सज्दा–5)

(6) पाकीज़ा कलाम उसी की तरफ चढ़ता है और अल्लाह उसे ऊपर उठा लेता है। (फ़ातिर–10)

(7) फ़िरऔन का हामान से यह कहना कि ऐ हामान मेरे लिए एक महल बना कि में आसमान के दरवाज़े तक पहुंच कर मूसा के मअबूद को झांक कर देखूं। (ग़ाफ़िर–37)

(8) क्या तुम बेखोफ़ हों गये हो उस ज़ात से जो आसमानों में है कि वह तुम्हे ज़मीन में धंसा दे। (मुल्क–16)

(9) फरिश्ते और रूह (जिब्रील) उस की तरफ चढ़कर जाएंगे। उस दिन जिसकी मिक़दार पचास हज़ार साल है। (मआरिज–4)

अहादीसे रसूल सल्ल. जिनसे अल्लाह का आसमान पर होना साबित होता है

1. (मेअराज की रात) जिब्रील अलैहि. नबी सल्ल. को लेकर अल्लाह की

तरफ़ (आसमानों पर) चढ़े। (बुख़ारी–7517)

2. आप सल्ल. ने फ़रमाया ''मैं अमीन हूँ उसका जो आसमान पर है। (बुख़ारी–4351)

3. लौंडी वाली हदीस में है कि नबी सल्ल. ने उससे पूछा कि अल्लाह कहां है? तो उसने कहा आसमान में। फिर आप सल्ल. ने पूछा कि मैं कौन हूँ? तो वह बोली–आप अल्लाह के रसूल हैं। आप सल्ल. ने फ़रमाया–इसे आज़ाद कर दो। यह ईमान वाली है। (मुस्लिम–873)

4. तुम रहम करो उन पर जो ज़मीन में है तो तुम पर वह रहम करेगा जो आसमान में है। (तिर्मिज़ी–1741)

5. जन्नत में जन्नती अल्लाह का दीदार करेंगे। अल्लाह तआला उनकी तरफ़ उनके ऊपर से झांकेगा। (इब्ने माजा–184)

6. हमारा रब हर रात आसमाने दुनिया की तरफ़ उतरता है। (बुख़ारी–1145)

7. जो फ़रिश्ते रात में तुम्हारे साथ रहे थे। वो (सुबह) अल्लाह की तरफ़ चढ़ते हैं। (बुख़ारी–555, मुस्लिम)

8. जो औरत शौहर के बुलाने पर न आए तो वह जो आसमान में है उस औरत पर नाराज़ होता है। (मुस्लिम–2615)

9. जब अल्लाह का ज़िक्र करने वाले जुदा हो जाते हैं तो फ़रिश्ते आसमान की तरफ़ चढ़ जाते हैं। (मुस्लिम–7069)

10. मेअराज वाली हदीस मे है ''जिब्रील (अलैहि.) मुझे लेकर सदरतुल मुन्तेहा तक पहुंचे और यह छठे आसमान पर है।'' (मुस्लिम–251,255 अबु नईम)

अगर अल्लाह की ज़ात हर जगह होती ?

अगर अल्लाह तआला अपनी ज़ात के साथ हर जगह मौजूद होता। जैसा कि मुअतज़ेला का अक़ीदा है तो नबी सल्ल. को आसमानों पर बुलाने की क्या ज़रूरत थी? मेअराज का इन्कार करने वाला बिदअती व गुमराह क्यो कहा जाता? मालूम हुआ कि अल्लाह अपनी ज़ात के साथ अर्श पर है। अपनी मख़लूक़ से अलग है। लेकिन उसका इल्म, कुदरत और बादशाही हर जगह मौजूद है।

इमाम बैहक़ी रह. ने इमाम अबु हनीफ़ा रह. से रिवायत किया कि ''अल्लाह आसमान में है न कि जमीन पर और जो अल्लाह के अर्श पर होने का इन्कार करे वह क़ाफिर है।'' ख़ुद इमाम अबु हनीफा रह. ने किताब फ़िक्ह अकबर में लिखा कि ''अगर कोई कहे कि मैं नहीं जानता कि मेरा रब आसमान पर है या ज़मीन पर तो बिला शुब्हा वह काफ़िर हो गया। इसलिए कि इर्शादे बारी है–अल्लाह अर्श पर मुस्तवी है और उसका अर्श सातों आसमानों के ऊपर है।'' (बैहक़ी)

इमाम मालिक रह. ने फ़रमाया ''अल्लाह तआला आसमान पर है और उसका इल्म हर जगह है।'' (इज्तेमाअ अल जुयुश अल इस्लामिया) अबुल हसन अशअरी रह. कहते हैं''अल्लाह तआला की सिफ़ात के बारे में मैं इमाम अहमद बिन हम्बल रह. के अक़ीदे पर हूँ। यानि यह कि अल्लाह अर्श के ऊपर है और कोई जगह उसके इल्म से ख़ाली नहीं। (अल–अबाना)

इमाम शाफ़ई रह. के नज़दीक ''अल्लाह को अर्श पर मानना ईमान है।'' (अअलामुल मौकिईन)
इमाम शौकानी रह. रिसाला ''अल इर्शाद व अल तहफ़ ''मै लिखते है– ''अल्लाह तआला अर्श पर है।'' यह बात हर कोई अपने दिल में मेहसूस करता है। आप खुद यह बात देख सकते है कि जिसे अल्लाह से फ़रियाद, इल्तेजा या दुआ करनी हो तो वह अपना हाथ आसमान की ही तरफ़ फैलाता है और जब कोई नाज़ुक मामला होता है तो निगाहें भी ऊपर ही की तरफ उठती है। इसमें आलिम या जाहिल का कोई फर्क नही सब बराबर है। इमाम तिर्मिज़ी रह. फरमाते ' है अल्लाह का इल्म उसकी कुदरत और उसकी बादशाही हर जगह है।
मगर वह (खुद) अर्श पर है।'' (तिर्मिज़ी–तफ़सीर सूरह हदीस–3055)

अल्लाह को हर जगह मानने वालों के दलाइल

(1) वही अव्वल है, वही आखिर है। वही ज़ाहिर व बातिन है और उसे हर चीज का इल्म है। (हदीस–आयत–03)
(2) वह जानता है जो चीज़ ज़मीन के अन्दर दाखिल होती है और जो उसे उससे बाहर निकालती है। जो कुछ आसमान से नाज़िल होता है और जो कुछ उसकी तरफ़ ऊपर चढ़ता है और '' जहां भी तुम हो वह तुम्हारें साथ है। (हदीद–04)
(3) हम तो गर्दन की रग से ज्यादा उसके करीब हैं। (काफ़–16)
(4) बेशक अल्लाह हमारे साथ है। (तौबा–40)
(5) अल्लाह ने उसकी बात सुन ली है जो अपने शौहर के मामले में झगड़ती और अल्लाह से फ़रियाद करती थी और अल्लाह तुम दोनो की बातें सुन रहा था। (मुजादेला–आयत–01)
6. जिस तरफ़ तुम मुंह करो। उसी तरफ अल्लाह है। (बक़रा–115)
जवाब:– इमाम बैहकी रह. अपनी किताब अस्मावल सिफ़ात के सफ़ा–304 पर लिखते है– मक़ातिल बिन हयान रह. कहते है कि अल्लाह के इस क़ोल कि '' वह हर चीज़ से पहले हर चीज़ के बाद, हर चीज़ से ऊपर और हर चीज़ से क़रीब है।'' तो बेशक इस कुर्ब से मुराद उसका इल्म और उसकी कुदरत है ओर वह ब ज़ाता अपने अर्श पर है और हर चीज़ को जानता है। यह क़ोल कि उसने ज़मीन व आसमान 6 दिनों में बनाए और हर एक दिन (हमारे) एक हज़ार साल के बराबर है। फिर उसने अर्श पर क़रार पकड़ा। वह जानता है जो कुछ ज़मीन में दाखिल होता है यानि दाना व बीज और जो कुछ उसमे से निकलता है यानि पैदावार। जो कुछ आसमान से नाज़िल होता यानि पानी का हर क़तरा और जो कुछ उसकी तरफ़ जो ऊपर चढ़ता है यानि फ़रिश्तों के ज़रिए आसमान की तरफ़ जो कुछ भी चढ़ता है।'' वह तुम्हारे साथ है जहां कहीं भी तुम हो' यानि उसकी कुदरत उसकी बादशाहत और उसका इल्म तुम्हारे साथ है, जहां कही तुम हो और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह सब देखता–जानता है।
जामेअ तिर्मिज़ी में है– अल्लाह के रसूल सल्ल. ने सात ज़मीने गिनवाई और कहा हर दो ज़मीन के बीच 500 साल के सफ़र की दूरी है और क़सम उस ज़ात की जिसके हाथ में मुहम्मद सल्ल. की जान है। अगर तुम ले चलो

एक रस्सी को सबसे नीचे की ज़मीन तक तो भी वह अल्लाह की हुकूमत ही में पहुंचेगी। फिर आप सल्ल. ने सूरह हदीद की आयत 03 ''वही सबसे पहले है और वही सबसे आखिर तिलावत की। इमाम तिर्मिज़ी रह. ने कहा कि अहले इल्म ने इस हदीस की यह तफ्सीर की है कि अल्लाह के इल्म, उसकी सल्तनत और उसकी कुदरत में ही पंहुचेगी। अल्लाह का इल्म हर जगह है और वह खुद अर्श के ऊपर है। (तिर्मिज़ी–3055)

सार यह कि कुर्ब से मुराद अल्लाह के इल्म और कुदरत का क़रीब होना है, बिल्जात नहीं। बज़ाता तो वह अर्श पर है उसका इल्म और बादशाही हर जगह है। वहीं से वह सब की हरकतों को जानता है। और सब की बातें सुनता है।

इब्ने अबि हातिम ने रिवायत किया कि ''जहां कहीं भी तुम हो अल्लाह तुम्हारे साथ है।'' की तफ्सीर इब्ने अब्बास रज़ि. ने यह की कि ''इससे मुराद उसका इल्म है, बिल्ज़ात नहीं। वह खुद तो अर्श पर है।

इमाम इब्ने तिमिया रह. और इब्ने अब्दुल बर रह. ने कहा कि अल्लाह अपने बन्दों के साथ अपने इल्म से है और किसी अहले इल्म का इसमें खिलाफ़ नहीं। यही अक़ीदा इब्ने अब्बास रज़ि., दहाक, मुक़ातिल, सुफ़यान सौरी, इमाम मालिक और इमाम अहमद बिन हम्बल रह. वग़ैरह का भी है। (किताब–अल अलु) ''जिस तरफ़ तुम मुंह करो उसी तरफ़ अल्लाह है।'' का मतलब यह है कि पूरब व पश्चिम (उत्तर–दक्षिण) उसी का है। तुम्हारे हर काम व बात की उसे जानकारी है। वह मशहूर रिवायत कि जब सरे राह एक बुढ़िया ने अमीरूल मोमिनीन उमर रज़ि. को रोक कर देर तक बातें की तो उसके जाने के बाद एक शख़्स ने कहा–अमीरूल मोमिनीन! आपने इस बुढ़िया की खा़तिर कुरैश के लोगों को इतनी देर तक रोके रखा। तब उमर रजि. ने फ़रमाया–अफ़सोस तुझ पर! तू जानता है यह औरत कौन थी? यह वह औरत है जिसकी शिकायत अल्लाह तआला ने सातों आसमानों के ऊपर अर्श से सुनी थी। इस सब के बावजूद किसी फ़िर्के या लोगों का यह अक़ीदा कि अल्लाह (अपनी ज़ात के साथ) हर जगह मौजूद है। कैसे सही हो सकता है? इस अक़ीदे से तो अल्लाह ज़मीन पर, हामिला औरतो के पेट में, पहाड़ों, जानवरों, पेड़ो और हर पाक व नापाक जगहों पर मानना पड़ेगा/जबकि हमारा रब पाक है। शैख़ अब्दुल वहाब शअरानी ने सयद अली खुवास से नक़ल किया कि '' अल्लाह हर जगह मौजूद है '' कहना किसी तरह जाइज़ नही। अहले सुन्नत वल जमाअत का यह अक़ीदा नही है कि हर जगह और हर एक के साथ अल्लाह की ज़ात है। (अल मवाक़ीत वल जवाहर)

अल्लाह तआला हम सभी को अक़ीदे की दुरूस्तगी़ की तौफ़ीक़ अता फ़रमायें।

आमीन!

माखूज़
अल्लाह तआला अर्श पर या हर जगह
अज़ नवाब सिद्दीक़ हसन खान

आपका दीनी भाई
मुहम्मद सईद
दिनांक. 12/03/12